REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

अजय शर्मा के साहित्य में समाज: भूमंडलीकरण के संदर्भ में

प्रभजोत कौर[1] एवं डॉ. विनोद कुमार[2]
[1] अनुसंधित्सु, समाज विज्ञान एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी (पंजाब)
[2] एसोसिएट प्रोफेसर, समाज विज्ञान एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी (पंजाब)

प्रस्तावना :

भूमंडलीकरण का सम्बन्ध मुख्यतः विश्व बाजारीकरण से लगाया जाता है। जो व्यापार अवसरों के विस्तार का द्योतक है । भूमंडलीकरण में विश्व बाजारों के मध्य पारस्परिक निर्भरता उत्पन्न होती है क्योंकि व्यापार देश की सीमाओं में न बँधकर लाभ की दशाओं का दोहन करने की दशा में अग्रसर होता है ।

भूमंडलीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है| भूमंडलीकरण का उपयोग अक्सर आर्थिक भूमंडलीकरण के सन्दर्भ में किया जाता है, अर्थात व्यापार, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, पूंजी प्रवाह, प्रवास और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण। भूमंडलीकरण की कई विशेषताएं हैं जिसकारण संगठनों द्वारा इसके स्वरूप को जन्म दिया गया है| इसी कारण विश्व में इसके अधिक प्रभाव दिखाई पड़ते दिखाई देने लगे हैं|

भूमंडलीकरण प्रत्येक देश को भिन्न-भिन्न ढंग से प्रभावित करता है। इसका प्रभाव एक देश से दूसरे देश में भी बदल जाता है। भूमंडलीकरण का विकसित देशों पर प्रभाव विकासशील देशों से अलग होगा। विकसित देशों में भूमंडलीकरण से नौकरियां कम हुई हैं क्योंकि कई कंपनिया उत्पादन खर्च को कम करने के लिए उत्पादन इकाइयों को विकासशील देशों में ले जाती हैं। यूरोप के कई देशों में बेरोजगारी एक सामान्य बात हो गई है। विकासशील देशों में भूमंडलीकरण खाद्यान्नों एवं अन्य कई निर्मित वस्तुओं के उत्पादकों को प्रभावित करता है। भूमंडलीकरण ने कई विकासशील देशों के लिए दूसरे देशों से कुछ मात्रा में वस्तुए खरीदना अनिवार्य बना दिया है, भले ही उन वस्तुओं का उनके अपने देश में ही उत्पादन क्यों न हो रहा हो। बाहर के देशों की निर्मित वस्तुओं के प्रवेश से स्थानीय उद्योगो को खतरा बढ़ जाता है। विकासशील देशों की दृष्टि से भूमंडलीकरण के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव पड़ रहे हैं।

भूमंडलीकरण में मुक्त व्यापार, उपभोक्तावादी समाज बाज़ारवाद, विज्ञान टैक्नालोजी तथा मीडिया आदि केन्द्र में हैं। जब संपूर्ण विश्व एक गांव ही है तो ऐसे में डा. अजय शर्मा संभवतः ऐसे उपन्यासकार सिद्ध होते हैं जिन्होंने इस विश्व रूप गांव के समक्ष चुनौतियों, पीड़ाओं का दिग्दर्शन अपने उपन्यासों में करवाया है।

डा. अजय शर्मा के उपन्यासों के केन्द्र में मुख्यतः विस्थापन का दर्द है जिनमें प्रमुख आजीविका, युद्ध की विभीषिका, विभाजन की त्रासदी, घर की आर्थिक तंगी, पीढ़ियों के वैचारिक मतभेद, युवाओं में गरीबी के अभिशाप से मुक्ति की तीव्र लालसा, आतंकवाद रूपी काले अंधेरे से निकल सुखद जीवन की तलाश। विस्थापन की समस्या, विस्थापित होते या हुए लोगों की समस्या, उनकी मानसिक दशा, मनोवृति का जीवन्त चित्रण अजय शर्मा के उपन्यासों में मिलता है। इसमें विस्थापन के कारणों की तलाश भी है, पीड़ा भी है तथा इससे मुक्ति के सफल-विफल प्रयास तथा अनुतरित प्रश्न भी समाविष्ट हैं। ऐसा भी नहीं है कि इनके उपन्यासों में केवल विस्थापन की ही समस्या केन्द्र में है। अपितु आजकल विश्व जिन समस्याओं से दो-चार हो

रहा है उनकी औपन्यासिक अभिव्यक्ति इनकी कृतियों में प्रत्यक्ष ढंग से प्रस्तुत हुई है। नारी की व्यथा-कथा का मार्मिक चित्रण, स्त्री पुरुषों के बदलते संबंधों का वर्णन, राजनीतिक हत्थकण्डों से भ्रष्ट हुए समाज का चित्रण। लोकतंत्र के चौथे-स्तम्भ पत्रकारिता जिसका आधार सत्य और केवल सत्य होता है, परन्तु झूठ रूपी दीमक उसे जिस तरह खोखला कर रहा है, उसका प्रतीकात्मक चित्रण भी मिलता है।

अजय शर्मा के प्रथम उपन्यास 'चेहरा और परछाईं' में सर्वप्रथम विस्थापन का दर्द, विस्थपित होते लोगों की पीड़ा दृष्टिगत हुई है परन्तु यहां विस्थापन का कारण कथा नायक की अपनी इच्छा है। पंजाब के नवयुवकों के मायानगरी मुंबईकी ओर पलायन से उन्हें अपनी जन्मभूमि, अपने माता-पिता से, सगे-संबंधियों से विस्थापित हो जाना पड़ता है। इस चयन से उन्हें कई मुसीबतों का सामना भी करना पड़ता है। लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि विस्थापन के इस चयन में कुछेक लोगों की ही अभिलाषाएं पूर्ण हो पाती हैं। बाकी सब को निराशा के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगता। फिल्मी दुनिया की चकाचौंध, रातों-रात बहुत अधिक धन कमा करोड़पतियों में नाम गिनवाने की इच्छा तथा घर-घर में पहचान होने की ख्वाहिश उन्हें सारे रिश्ते-नातों को तोड़ अपने कर्त्तव्य से मुख-मोड़ कर केवल अपने सपनों को पूरा करने की होड़ उन्मुख करती है। चाहे उन्हें वहां हासिल कुछ नहीं होता। एक स्ट्रगर पात्र विपिन अपने दोस्त को कहता है, "यार परमिन्दर, कई साल हो गए इस माया नगरी आए हुए लेकिन अभी तक वहीं खड़े हैं, जहां से चले थे। जब मैनें घर में सब का विरोध करके ग्वालियर छोड़ा था तो सबने मुझे रोकने की कोशिश की थी। छुटकी ने तो राखी का वास्ता भी दिया था। लेकिन मेरा फैसला अटल था और दावे पक्के कि मैं जल्द ही कुछ न कुछ मुकाम हासिल करके वापस लौटूंगा, लेकिन इन सालों में वह सारे दावे ताश के पत्तों की तरह बिखर गए। मुझे लगता है कि भूख के साथ लड़ते-लड़ते सारी ज़िन्दगी निकल जाएगी। घर से निकला था तो सपने बहुत हसीन थे लेकिन यहां आकर रोटी के एक-एक निवाले की खातिर लड़ना पड़ा।"[1] विपिन के माता-पिता उसे रोकते हैं कि वह मुंबई न जाए। बहन भी राखी का वास्ता देती है। परन्तु विपिन को अपनी जिद्द के आगे कुछ नज़र नहीं आया। अब वह वापस लौटना भी चाहता है परन्तु वह नहीं जा पाता। "कई बार तो मन में आया कि ग्वालियर वापस लौट जाऊं लेकिन यह सोच कर मेरी रूह कांप जाया करती है कि कौन सा मुंह लेकर...वहां जाऊं....कैसे जाऊं। अब तो कभी-कभी मुकेश के गाने के बोल, 'जीना यहां मरना यहां, इसके सिवा जाना कहां...।' याद आते हैं।"[2] विपिन एक ज्योतिषी भी है। उसे जिन मुश्किलों का सामना करना पड़ा, वह नहीं चाहता कि किसी और को भी करना पड़े। विपिन मुंबई आने वाले हर स्ट्रगलर को अपने घर लौट जाने को कहता है। उसे लगता है कियहां किसी किस्मत वाले की ही ज़िन्दगी बदलती है वरना सब हताश ही होते हैं। वह सबको ज्योतिषी की बातों में उलझा कर वापिस लौटा देता है। "....मैं तो इसलिए कहता हूं कि यहां आने वाला हर नया स्ट्रगलर मेरी बातें सुन कर दहशत में आ जाए और अपने घर लौट जाए, क्योंकि घर छोड़ने का ग़म कुछ समय के बाद हर चीज़ के ऊपर हावी होने लगता है।.... हो सकता है कि मेरी चोट से मां-बाप वापस मिल जाएं।"[3] पर वह उन स्ट्रगलर को जो अपनी भूमि से, अपने लोगों से विस्थापित हो स्वेच्छा से यहां पहुंचे थे नहीं समझा पाता। चाहे उन्हें मुंबई रहते हुए वहां के लोगों की ज्यादतियों को सहना पड़ता है। बद्द से बदतर स्थान पर रहना पड़ता है और खाने के नाम पर पतली पानी सी दाल खाकर पेट भरना पड़ता है। वह स्ट्रगलर्ज़ के साथ रहकर एक-दूसरे का ग़म बांटते हैं। किसी भी मुसीबत में कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं परन्तु अकेलेपन एवं अलगाव की स्थिति हमेशा बनी रहती है और घर की याद उन्हें आ ही जाती है। कथानायक विवेक कहता है, "आज मुझे भी घर की याद आ गई। मुझे महसूस हुआ कि आज मुझे पंख लग जाएं तो मैं उड़ कर अपने शहर पहुंच जाऊं।"[4] विवेक के अचेतन में कहीं न कहीं पछतावा है घर से आने का। अपनों का विरोध करके वह घर से आ तो जाता है, परन्तु अब वह चाहकर भी घर नहीं लौट पाता। 'बसरा की गलियों' में भी विस्थापन की यही समस्या और भी गहरी परन्तु अत्यंत भयानक रूप से उभरी है। यहां कथानायक अपने देश, अपने घर से विस्थापित क्या होता है, उसकी पूरी ज़िन्दगी ही विस्थापित हो जाती है। कथानायक अपनी नई ज़िन्दगी की शुरूआत, पैसा कमाने की इच्छा तथा मां की सूनी कलाईयों पर चुड़ियां सजाने के सपने को साकार करने के लिए इराक जाता है। परन्तु वहां पहुंचने पर नज़ारा ही कुछ और निकला। नायक उस घड़ी को कोसता है जिसने उसे उसका घर, देश ही नहीं छुड़वाया बल्कि उससे उसका नाम, पहचान, धर्म सब छुड़वा दिया। पंजाब से विस्थापित हो वह बसरा पहुंचता है पर परिस्थितियां ऐसी बनती हैं कि उसे वहां से भी विस्थापित होना पड़ता है। फिर जो नाम, पहचान, धर्म बसरा में उसे मिला था वह फिर से छिन जाता है तथा पुनः विस्थापन। उपन्यास में कथानायक न भारत का हो पाया, न बसरा का, न अमरीका का और जब उसे किस्मत दोबारा अपने देश ले ही आती है तो भी परिस्थितियां उसे अजनबीपन, अकेलेपन का दंश झेलने पर मजबूर कर देती हैं। इराक पहुंचने पर जब सपनों का कत्ल होता है तो वह निर्णय लेता है कि लौट जाए। परन्तु ऐसा नहीं कर पाता। "....कई बार मेरा मन हुआ, मैं वापस लौट जाऊं। मगर जैसे ही मेरे मन में लौटने का ख्याल आता, मेरी आंखों के सामने

मां की सूनी कलाइयां आ जाती हैं और मुझे ऐसा लगता जैसे वे मुझसे कुछ मांग रही हों। फिर मैं सोचता अगर मैं चल गया तो शायद सूनी कलाइयां सारी ज़िन्दगी सूनी ही रह जाएंगी।"[5]

बसरा में एक मुसलमान लड़की से शादी हो जाने पर नायक की तो ज़िन्दगी में भूचाल आ जाता है। उसकी सारी तमन्नाएं, इच्छाएं दफन हो जाती हैं। बेशक वह बुशरा से प्रेम करता था परन्तु धर्म परिवर्तन कर, खतना करवा वह कभी उससे शादी करने के हक में नहीं था। वह सदा के लिए अपने घर-परिवार, मुल्क से दूर हो गया था। "....मेरे अपने मुझसे सदा के लिए दूर हो गए थे। शायद जीते जी उनको कभी न मिल पाऊं, मरने पर भी नहीं। क्योंकि जीते जी जिसकी सारी इच्छाएं दफन हो गईं हों, मरने पर उसकी क्या हालत होगी, इसकी कल्पना मात्र से ही मेरी रूह कांप गईं।"[6] नायक को लगता है कि उसके सपनों का कत्ल हुआ है। पूरी दुनिया से उसे अलग कर दिया गया। उसे जबरदस्ती बुशरा ने पाने की कोशिश की है प्यार नहीं एक जंग थी, जो उसने जीतनी चाही। वह बुशरा से कहता भी है, "प्यार भावनात्मक लगाव होता है। जो जबरदस्ती किया जाता है, तो वह लूट होती है। फर्क सिर्फ इतना है कि आप लोगों ने मुझे धोखे से लूट लिया। इसके बावजूद लुटा हुआ माल आपका न हो सका।"[7] इस प्रकार विस्थापन का दर्द झेलते-झेलते लोग जीवन की खुशियों से, अपने आपसे भी विस्थापित हो जाते हैं तथा न जाने कब सांसों की माला टूट जाती है और पता भी नहीं चलता।

'काल-कथा' उपन्यास में भी विस्थापन की समस्या दृष्टिगत होती है। यहां विस्थापन, विभाजन का अभिशाप, आतंकवाद की मार झेल रहे लोगों के दर्द, पीड़ा के रूप में हृदय को उद्वेलित कर देता है। यहां बीजी और उनका परिवार विभाजन का दर्द सह रहे हैं। लाहौर से विभाजन के बाद आकर कानपुर में बीजी का परिवार बसा पर 84 के दंगों के कारण वहां से भी उन्हें विस्थापित होना पड़ा। ".....अभी तो पाक से उजड़ने वाले जख्म भी नहीं भरे थे कि अचानक से फिर विस्थापन की पीड़ा ने हमारा लहू निचोड़ लिया।"[8] बीजी ही नहीं ऐसे कई परिवार हैं जो विस्थापन की पीड़ा का दंश झेल रहे हैं। "...जब असुरक्षा की भावना किसी के मन में घर कर जाए तो शायद इससे बड़ी पीड़ा कोई हो ही नहीं सकती। आज तक हम विस्थापन की पीड़ा का दंश झेल रहे हैं।"[9] विस्थापन की पीड़ा ऐसी है जो सदा सालती रहती है और जो लोग एक बार उजड़ जाते हैं वह ज़िन्दगी कैसे दोबारा शुरू कर पाएंगे कोई नहीं जान सकता।

विभाजन हुआ, लोग विस्थापित हुए, पंजाब में दंगे हुए, उग्रवाद का दौर आया परन्तु इसके पीछे बहुत न सही दोषी सरकार भी है। डा. सिंह डाक्टर को कहता है, "कहीं न कहीं सरकार का ही दोष होता है। कई एंजेसियां हैं जो काम करती है और जब उन्होंने चाहा उग्रवाद खत्म हो गया। बस पंजाब का विकास रोकना था, ताकि पंजाब बहुत बड़ी शक्ति बनकर सिर न उठा सके। थम गया उग्रवाद, लेकिन खत्म नहीं हुआ। एंजेसियां जब चाहेंगी, तब बोतल में छुपे हुए जिन्नों को बाहर निकाल लेंगी और जिन्न आदम-बो, आदम-बो करते हुए लोगों की तबाही फिर से करनी शुरू कर देंगे।"[10] जितनी तबाही हुई है हिसाब लगाना मुश्किल है। लेकिन पंजाब के लोग इतने उद्यमी हैं कि फिर कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगते हैं। एक नया इतिहास रचने के लिए तैयार रहते हैं।

अजय शर्मा के उपन्यास में दूसरा महत्त्वपूर्ण विषय है नारी की व्यथा-कथा। नारी सृष्टि की जननी है, अपना सर्वस्व त्याग कर भी सदैव अपने कर्त्तव्य को पूर्ण करती है। दूसरों के लिए मर मिटने को तैयार हो जाती है। हर रिश्ते की गरिमा को बनाए रखने के लिए अपना आप मिटा देती है। लाख मुश्किलें आएं, पर अपने-अपनों पर आंच नहीं आने देती। मुश्किलों तथा अपनों के बीच दीवार बन खड़ी हो जाती है। परन्तु कभी उसे सहारे की जरूरत पड़े तो कोई भी उसके साथ खड़ा नहीं होता। पर फिर भी वह उफ तक नहीं करती। कुछ ऐसी ही है, बसरा की गलियों की बुशरा। नायक से वह प्रेम करती है। नहीं चाहती कि उसके प्रियतम के साथ नाइंसाफी हो और उसे कोई भी मुसीबत आए परन्तु मां के दबाव में आकर उसे वह सब करना पड़ता है जो वह कभी नहीं करना चाहती थी। इसके लिए उसे नायक के कई जुल्मों का शिकार होना पड़ता है। परन्तु बुशरा कभी कोई सवाल नहीं करती। एक वह दिन बुशरा से पूछता भी है कि तुमने कभी मुझे कुछ क्यों नहीं कहा। बुशरा कभी नहीं बोली, कहती है, "हर आदमी की अपनी-अपनी सज़ा है और उसे वह भुगतता है। अल्लाह की मर्ज़ी देखो, जब तुम मेरे कुछ नहीं थे, तब तुम मेरे सब कुछ थे। अब सब कुछ मेरा है और मेरा कुछ भी नहीं है। शरीर में दंश बनकर चुभ रहा है। उससे तो अच्छा है अल्लाह मुझे मौत दे दे और मैं कब्र में चुपचाप लेटी रहूं और कयामत की घड़ी में जब मुझसे कुछ मांगने के लिए कहा जाएगा तो मैं सिर्फ यही कहूंगी कि इस तरह की सज़ा किसी और औरत को न नसीब हो।"[11] आकाश यह बात कभी नहीं समझ पाया कि अगर उसके साथ गलत हुआ है तो बुशरा के साथ भी बहुत गलत हुआ है। उसे जो सब मिलना चाहिए था और जिस पर एक पत्नी का जो हक होता है, उसे कुछ भी नहीं मिला। गुलनार जो एक वेश्या थी। आकाश अक्सर उसके पास जाता था। उसे वह भी

समझाती है, "तुम दोनों में कोई खास फर्ख नहीं है। तुमने सज़ा पाई है मैं मानती हूं। क्या बुशरा के लिए भी यह किसी सज़ा से कम नहीं कि तुम आज तक उसे अपना नहीं सके। औरत का यही सबसे बड़ा दर्द है। शायद तुम न समझ सको।"[12]

दुनिया में माना जाता है कि औरत के लिए मर्द का सहारा इस दुनिया में जीने के लिए बेहद जरूरी है। 'खुली हुई खिड़की' आई नायिका ललिता पूरी तरह पति पर निर्भर है। छोटे से छोटा काम करवाने के लिए भी उस पर निर्भर रहती है| पति की मृत्यु के उपरांत उसे जीवन काटना बेहद मुश्किल लगता है। "पता नहीं क्यों, आजकल मेरे मन में एक बोझ सा बना रहता है, कभी-कभी तो मैं डर जाती हूं। कभी-कभी मुझे लगता है कि यह पहाड़ जैसी जिन्दगी कैसे कटेगी ?"[13] औरत का अस्तित्व अजय शर्मा के उपन्यासों में पूरी तरह आदमी से बंधा है। जब तक पति जिंदा था तो वह सजधज कर चहकी-महकी सी रहती थी। परन्तु अब, "चेहरा पीला पड़ चुका था। सफेद चुन्नी गले में लहराने की बजाय सिर पर बंधी रहती थी। हाथ की चूड़ियों की खन-खन के बिना सूने लग रहे थे, ठोडी के नीचे दो-तीन बाल उग आए थे। मैं उदास हो गई और अचानक बहुत दर्द से रोने लगी, रोते-रोते मेरा ध्यान उसकी तस्वीर पर गया तो मुझे लगा, सती प्रथा का रिवाज भी गलत नहीं था। औरत का अस्तित्व तो मर्द से ही बंधा है।"[14]

'काल-कथा' में आशा नामक महिला का जिक्र है जो तलाक शुदा है। वजीर चंद से उसके बहुत पुराने संबंध है। वह उससे शादी भी करना चाहता है पर परिस्थितिवश ऐसा नहीं हुआ। आशा का तलाक के बाद जीवन ही बादल जाता है। तलाकशुदा की मनोवृति का बहुत हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है। नर्द का दृष्टिकोण उसके बारे में जो बना जाता है कटाक्षपूर्ण ढंग से व्यक्त हुआ है, "किसी भी तलाक़शुदा औरत को देखने के बाद जो पहला भाव मर्द के मन में पैदा होता है, वह दंभ है। दंभ में भी स्वार्थ। उसी में मछली को फंसाने लिए कांटा डालता है। अगर मछली उस में फंस गई तो ठीक है, अगर नहीं फंसी तो स्वार्थ को ठेस पहुंचते देर नहीं लगती। अगर स्वार्थ को ठेसा पहुंच जाए, तो उसे घृणा में बदलते पल भी नहीं लगता है। उसी जहर में पालती है तलाक़शुदा औरत की जिंदगी।"[15]

औरत के जीवन की प्रत्येक स्थिति का वर्णन बखूबी किया गया है, चाहे वह विवाहिता हो, विधवा या तलाक़शुदा। भूमंडलीकरण की स्थिति में आज स्त्री-पुरुष संबंध भी निरंतर बदला रहे हैं। स्त्री पहले घर की चारदीवारी में कैद रहती थी, पर्दे में रहना, पराए मर्द से बात करना तो दूर उसके सामने जाने की अनुमति नहीं थी पर आज स्थितियां बदल गई हैं। आज पति के दोस्त से उसकी गैर-हाजिरी में बांटा भी करती है। 'खुली हुई खिड़की' में नायक के घर वालों को ऐतराज है कि उसका दोस्त उसकी गैर-हाजिरी में उसकी पत्नी से अकेले मिलता है पारा उसे इसमें कोई ऐतराज नहीं। उसक शब्दों से स्पष्ट है, "वह आएगा और जरूर आएगा| कैसा की हिम्मत जो उसे आने से रोक सके।...वह मेरा दोस्त है। मुझे भरोसा है उस पर। अगर वह मेरी गैर-हाजिरी में भी आता है तो उस पारा विश्वासा करा सकता हूं। मेरे घर से जाने के बाड़ा आगरा तुम्हें कोई जरूरी कामा आना पड़े तो तुम उसे बेझिझक बात कर सकती हो।"[16] नायिका को यही बात जीने का आधार देती है। पति की मृत्यु के बाद जब हर रिश्ता बेगाना हो जाता है तो नायिका को पति का दोस्त ही प्रोत्साहित करता है। नौकरी नहीं करना चाहती, पति का दोस्त किसी स्वार्था बिना के अपने मारे हुए दोस्त की दोस्ती के नाम पर उसे समझाता है कि नौकरी मिले या सरकार के घर से पैसा मिले तो किसी को एक पैसा भी ना दे। "भाभी, कोई सोने का बन कर भी आ जाए, किसी को एक कौड़ी भी मत देना।"[17] पूरी जद्दोजहद के बाद नायिका नौकरी कर पाती है। बदले स्त्री-पुरुष के संबंधों से जहां समाज के संकीर्ण दृष्टिकोण के दायरे की सीमा रेखा मिटी है वहीं मर्यादा, रीति-रिवाज़ को जो कि भारतीय संस्कृति का आधार-बिन्दु है उसका भी निरंतर हनन हुआ है। तभी आज भारत जिसे सारी दुनिया में उसकी संस्कृति के लिए पहचाना जाता था उसी कतार में आ खड़ा हुआ है जहां अन्य पाश्चात्य जागत के देश खड़े हैं।

जहां मानवीय संबंधों, मनोवृत्तियों का जीवंत चित्रण मिलता है वहीं भ्रष्ट राजनीति का भी चित्रण मिलता है। 'आकाश का सच' उपन्यास में अखबार जो कि लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है उसका राजनीतिक नेताओं ने अपने पैर जमाने के लिए दूरप्रयोग किया है। सरकार द्वारा अखबार के मालिकों को अपना गुलाम बना कर जनता के मन में झूठी सच्ची खबरें छापी जाती

हैं। "संपादक भी एक मोहरे के सिवा कुछ नहीं, जिस पार्टी को लाना है, इलेशन से पहले उसका प्रचार जमकर किया जाता है। बड़े-बड़े सर्वेक्षणों की रिपोर्टें अखबारों में छाप दी जाती हैं कि अमुक सरकार इस बार सत्ता में आएगी| मुझे यह राजनीति लगती है। लेकिन चक्कर वही पूंजीपतियों व सरकार का है। मुझे तो इलेक्शन मात्र एक खेल लगता है। एक छल है, जो लोगों को छलाने के लिए खेला जाता है।"[18] राजनीतिक यह अर्थ नहीं कि केवल नेता ही इसके अंतर्गत आते हैं अपितु राजनीति तो प्रत्येक कार्यालय चाहे सरकारी हो या प्राईवेट, हर जगह चलती है। रिश्ते-नाते की आड़ में या चालाकी से नए रिश्ते बनाकर अपने अधिकारियों को काम निकलवाने हेतु राजनीति का खेल खेला जाता है। "किसी भी प्राईवेट विभाग में चले जाओ, जतिवाद भाई-भतीजावाद का ही बलबाला है। मुझे लगता है कि हर बास की कमजोरी रहती होगी। रोज शाम को जो दरबार लगाते हैं, उनकी गलतियां भी नहीं निकाली जातीं। उन्हें काम भी दूसरों से कम करना पड़ता है। उन लोगों पर उनका वरदहस्त है। वे लोग जब चाहें छुट्टी पर चले जाएं और जब चाहें लौट आएं"[19] इस तह अखबार के माध्यम से अजय शर्मा ने राजनीति का घिनौना रूप सामान्य वर्ग के समक्ष लाने का सफल प्रयास किया है। 'बसरा की गालियां' में धर्म परिवर्तन को लेखक ने अपनी लेखनी का हिस्सा बनाया है। नायक कैसे परिस्थितियों के जाल में उलझा है और उसे हिन्दु से मुस्लिम, मुस्लिम से ईसाई बनना पड़ता है। "मैंने पहली बार इराक की धरती पर कदम रखा था, तब मैं एक हिन्दु था। जब इराक की धरती को छोड़ा तब मैं मुसलमान था और जब दोबारा इराक की धरती पर कदम रखा तो मैं क्रिश्चियन बन चुका था।"[20] इराक में अमरीका के युद्ध, आपसी लड़ाई के माध्यम से युद्ध के दुष्परिणामों का सजीव चित्र खींचा है। जेहाद के नाम पर पता नहीं कितने माँ-बाप बे-औलाद हो गए हैं। कितने बच्चे अनाथ और कितनी ही औरतें विधवा हो जाती हैं। उमर आकाश के साथ इराक की सेना में है। जब आकाश को इराकी सेना में जेहाद के नाम पर शहीद होने को ले जाया जाता है तो वहां उमर उसे मानव बम के रूप में मिलता है। वही इराक के हालातों के बारे में बताता है। "इराक-ईरान की जंग झेलते-झेलते यहां का बच्चा जब बचपन छोड़ता है, तो जेहाद के नाम पर उसके हाथ में खिलौने नहीं बंदूकें थमा दी जाती हैं।"[21] धर्म के नाम पर युद्धा किए जाते हैं, कभी अपने स्वार्थ के लिए सामान्यजन को निशाना बना कर युद्धा की आग में झौंक दिया जाता है। इस युद्ध से वंश बादल जाता है। सब तबाह हो जाता है और फिर बदलने को कुछ रहा ही नहीं जाता पर यह न तो धर्म की लड़ाई होती है न जेहाद की। यह तो मात्र निजी स्वार्थो की लड़ाई है। लड़ने वाला चाहे इराक हो ईरान हो, हिंदोस्तान हो या पाकिस्तान, परिणाम कभी ठीक नहीं होता। लड़ाई में मर्द तो सैनिक रूप में लड़ ही रहे होते है परंतु औरतें भी पीछे नहीं थीं। एलाइजा बसरा में आकाशा के साथ गई है जो अपने पति की तथा बच्चे की मौत के कारण बागी हो गई थी। वह युद्धा के मैदान में हाथों में हथियार लिए आदमी से कंधे मिलाकर खड़ी है। इस युद्ध का ही परिणाम है कि हर घर में विधवाएं और केवल अनाथ बच्चे ही रह जाते जाते हैं जिंदगी की ठोकरें खाने को और कुछ तो माँ के पेट में ही अनाथ हो जाते हैं, कई जहरीली गेसों से अपंग-विकलांग पैदा हो रहे हैं।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि अजय शर्मा के साहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष ढंग से प्रभाव देखा जा सकता है। उन्होंने हिन्दी उपन्यास जगत को एक नई दिशा प्रदान करने को कोशिश की है। वासत्व में सत्य को उजागर करना ही रचनाकार का धर्म है। इस धर्म का निरवाह निश्चय ही सरल नहीं, यह तलवार की धार पर चलने का सौदा है। हर युग का रचनाकार इस चुनौती को स्वीकारता है। वह 'कागद की लेखी' पर नहीं 'आंखिन की देखीं' पारा विश्वाश करता है, जान हथेली पर धरता है और उस 'आंखिन की देखी' को अनुभव की आंच में तपाकर अपने साहित्य में व्यक्त कर देता है। अजय शर्मा के उपन्यास भी इस आंखिन देखे सत्य का प्रामाणिक आख्यान हैं, परिवेशगत यथार्थ का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं| विश्व का सत्य और अजय शर्मा के उपन्यास-साहित्य को पढ़ना एक यात्रा करना है- एक यात्रा जो सम्पूर्ण विश्वभर से होती हुई पंजाब तक आ पहुंचती है।

संदर्भ

1. अजय शर्मा, चेहरा और परछाईं (दिल्ली : मनपरीता प्रकाशन, 2001), पृष्ठ 37
2. अजय शर्मा, चेहरा और परछाईं (दिल्ली : मनपरीता प्रकाशन, 2001), पृष्ठ 38
3. अजय शर्मा, चेहरा और परछाईं (दिल्ली : मनपरीता प्रकाशन, 2001), पृष्ठ 38

4. अजय शर्मा, चेहरा और परछाईं (दिल्ली : मनपरीता प्रकाशन, 2001), पृष्ठ 39
5. अजय शर्मा, बसरा की गालियां (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 33
6. अजय शर्मा, बसरा की गालियां (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 14
7. अजय शर्मा, बसरा की गालियां (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 157
8. अजय शर्मा, काल-कथा (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2006) पृष्ठ 101
9. अजय शर्मा, काल-कथा (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2006) पृष्ठ 102
10. अजय शर्मा, काल-कथा (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2006) पृष्ठ 115
11. अजय शर्मा, बसरा की गालियां (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 60
12. अजय शर्मा, बसरा की गालियां (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 13
13. अजय शर्मा, खुली हुई खिड़की (नई दिल्ली : मनपराईट प्रकाशन, 2002), पृष्ठ 26
14. अजय शर्मा, खुली हुई खिड़की (नई दिल्ली : मनपराईट प्रकाशन, 2002), पृष्ठ 29
15. अजय शर्मा, काल-कथा (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2006) पृष्ठ 120
16. अजय शर्मा, खुली हुई खिड़की (नई दिल्ली : मनपराईट प्रकाशन, 2002), पृष्ठ 23
17. अजय शर्मा, खुली हुई खिड़की (नई दिल्ली : मनपराईट प्रकाशन, 2002), पृष्ठ 30
18. अजय शर्मा, आकाशा का सच (दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 52
19. अजय शर्मा, आकाशा का सच (दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 52
20. अजय शर्मा, बसरा की गालियां (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 119
21. अजय शर्मा, बसरा की गालियां (नई दिल्ली : आस्था प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 93

LBP PUBLICATION